दिनांक:- 21/05/2020

हिन्दी-शिक्षण
बी०एड० द्वितीय वर्ष - 2018-2020
डा० दिनेश सहायक (असि० प्रोफेसर बी०एड० संकाय)

व्याकरण का अर्थ

विद्वानों ने व्याकरण की परिभाषा विभिन्न रूपों में की है। व्याकरण शब्द 'व्याकरोति' से लिया गया है। भाषा को व्याकृत करने वाला शास्त्र ही व्याकरण है। व्याकरण शब्द की शाब्दिक ~~व्युत्पत्ति~~ व्युत्पत्ति निम्न प्रकार से है:-

व्याकरण = वि + आ + कृ धातु + ल्युट् प्रत्यय यानि "व्याक्रियन्ते शब्दयेन" अर्थात् वह शास्त्र जिसके द्वारा अर्थ स्वरूप से शब्द सिद्ध हो सके। व्याकरण कहलाता है।

व्याकरण की परिभाषाऐं:-

महर्षि पाणिनी और पंतजलि के अनुसार -
" व्याकरण शब्दानुशासन है, इससे भाषा का रूप व्यवस्थित होता है।

डॉ० स्वीट के अनुसार - " व्याकरण भाषा का व्यावहारिक विश्लेषण अथवा उसका शरीर विज्ञान है।"

हेमचन्द्र के अनुसार:- " व्याकरण का काम है - भाषा पर अनुशासन रखना"

डॉ० बद्रीनाथ कपूर के अनुसार:-
" किसी भाषा को बोलने और लिखने के नियमों की व्यवस्थित पद्धति का नाम ही व्याकरण है।"

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

व्याकरण की विशेषताएँ

व्याकरण की विशेषताएँ निम्न लिखित हैं।

(1) व्याकरण भाषा की शुद्धता का साधन है, साध्य नहीं है।
(2) व्याकरण भाषा का संरक्षक तथा अनुशासक है।
(3) व्याकरण भाषा के स्वरूप की सार्थक व्यवस्था करता है।
(4) व्याकरण भाषा का शरीर विज्ञान है तथा व्यावहारिक विश्लेषण करता है।
(5) गद्य-साहित्य का आधार व्याकरण है।
(6) व्याकरण वास्तव में शब्दानुशासन ही है।
(7) भाषा की मितव्ययिता भी व्याकरण से होती है।
(8) भाषा की पूर्णता के लिए - पढ़ना, लिखना, बोलना तथा सुनना चारों कौशलों की शुद्धता व्याकरण के नियमों में आती है।
(9) व्याकरण से भाषा की प्रकृति की पहचान होती है।
(10) व्याकरण के द्वारा भाषायी तत्वों का ज्ञान मिलता है।
(11) व्याकरण के आधार से कोई नवीन भाषा सीखना।
(12) वाक्य की संरचना शुद्धता उस भाषा के व्याकरण से आती है।
(13) व्याकरण से नवीन भाषा को सीखने में सरलता एवं सुगमता होती है।

व्याकरण के प्रकार

आज ज्ञान के क्षेत्र में विस्फोट हो रहा है। सभी अध्ययन क्षेत्रों में ज्ञान में वृद्धि अधिक तीव्रता से हो रही है। इसका प्रभाव व्याकरण के क्षेत्र पर भी हुआ है। चॉमस्की ने एक नवीन व्याकरण का विकास किया है जिसे 'व्यावहारिक व्याकरण' की संज्ञा दी जाती है। इस प्रकार के व्याकरण

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

में नियमों के अनुसरण की अपेक्षा व्यावहारिकता अथवा प्रचलन को विशेष महत्व दिया है। इस प्रकार हमारे व्याकरण के तीन प्रकार हैं:-

(1) शास्त्रीय या सैद्धान्तिक व्याकरण
(2) व्यावहारिक व्याकरण
(3) प्रासंगिक व्याकरण

शास्त्रीय या सैद्धान्तिक व्याकरण :-

विद्वानों ने वाक्य संरचना, ध्वनि, स्वर आदि के व्याकरण के नियमों एवं सिद्धान्तों की रचना की है, उनका ज्ञान छात्रों को दिया जाता है। साथ ही उनके प्रयोग को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जाता है; तथा छात्रों को भी अवसर देते हैं कि वे वाक्य संरचना में उनका प्रयोग करें। वाक्य की संरचना में घटकों - कर्ता, क्रिया कर्म, विश्लेषण, संज्ञा, सर्वनाम क्रिया-विशेषण की पहचान करें। इसमें भाषा की शुद्धता को प्राथमिकता दी जाती है।

व्यावहारिक व्याकरण :-

इस व्याकरण के स्वरूप का विकास चोमस्की ने किया है जिसमें नियमों की अपेक्षा व्यावहारिकता को अधिक महत्व दिया है। मातृभाषा के बोलने के कारण व्याकरण के नियमों का प्रयोग बहुत कम होता है। जबकि सम्प्रेषण बोधगम्य एवं मितव्ययी होता है। बिना कर्ता के क्रिया के प्रयोग से सम्प्रेषण हो जाता है। पूर्ण वाक्य ही अपेक्षा अधूरा वाक्य ही सम्प्रेषण के लिए पर्याप्त होता है। इसमें भाषा की शुद्धता की अपेक्षा सम्प्रेषण की बोधगम्यता को महत्व दिया जाता है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(4) प्रासंगिक व्याकरण :-

इस प्रकार के व्याकरण में शुद्ध स्पष्ट अभिव्यक्ति पर अधिक बल दिया जाता है। इसमें भाषा की दृष्टि से अशुद्धियाँ रहती हैं परन्तु अपेक्षाकृत कम रहती है। गद्य-साहित्य में कहानीकार तथा नाटककार उपन्यासकार भाषा की शुद्धता पर ध्यान नहीं है [~~[illegible]~~] अपितु सम्प्रेषण की प्रभावशीलता एवं अभिव्यक्ति पर विशेष ध्यान देते हैं।

व्याकरण शिक्षण का महत्व

(1) भाषा के ध्वनि विचार, शुद्ध विचार तथा अर्थ विचार का सही ज्ञान व्याकरण द्वारा प्राप्त होता है। उसके साथ ही उनका विश्लेषण भी किया जाता है।

(2) व्याकरण शिक्षा द्वारा भाषा का शुद्धतापूर्वक प्रयोग होता है।

(3) व्याकरण की शिक्षा से भाषा शास्त्र अनुशासित रहता है। इससे अव्यवस्था तथा निरंकुशता हो जाती है।

(4) व्याकरण शिक्षा हिन्दी भाषा के ज्ञान के साथ तुलनात्मक अध्ययन द्वारा अन्य दूसरी भाषाओं के अध्ययन में सहायक है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(5) व्याकरण भाषा का सहयोगी है। छात्रों के द्वारा प्रायः उच्चारण, लिपि, वाक्य विन्यास, अक्षर विन्यास, शब्द रचना आदि गलतियाँ होती है। इनको प्रयोग द्वारा दूर किया जाता है।

व्याकरण शिक्षण की उपयोगिता

(1) व्याकरण भाषा के स्वरूप की रक्षा करके उचित प्रयोग की प्रक्रिया की जानकारी देने में समर्थ है।
(2) व्याकरण का अनुशासन जीवन को प्रभावित करता है।
(3) व्याकरण के द्वारा भाषा में शुद्धता आती है।
(4) व्याकरण द्वारा शब्द रचना तथा वाक्य विन्यास की जानकारी मिलती है।
(5) व्याकरण द्वारा छात्रों में आलोचना विकसित होती है।

डा० दिनेश सिंह यादव (असि० प्रोफेसर बी०एड० संकाय)

बी० एड० द्वितीय वर्ष – 2018-2020
पेपर – हिन्दी शिक्षण
दिनांक – 21/05/2020

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner